नेहरू स्टेडियम में 26 जनवरी गणतंत्र दिवस पर आयोजित परेड में जिसमें एनसीसी, सीमा सुरक्षा बल, एसएएफ, होमगार्ड ने भाग लिया.

क्या इंडिया गेट गणतंत्र का प्रतीक है?

आप क्या जानते हैं कि इंडिया गेट किसकी याद में बना है? शायद देश की कुल आबादी की एक फीसदी जनता को भी इसका जवाब पता नहीं होगा। विडंबना तो यह है कि आजादी के 62 वर्ष होने के बाद भी हमारे शासक इसके बारे में अनभिज्ञ हैं। इसीलिए गणतंत्र दिवस हो या स्वतंत्रता दिवस, हमारे राष्ट्र प्रमुख शहीदों के नाम पर इंडिया गेट के सामने नतमस्तक होते रहे हैं।

इंडिया गेट की वास्तविकता यह है कि उसे प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा करते हुए शहीद होने वाले जवानों की याद में खडा किया गया है। अब वह विश्व युद्ध ब्रिटेन ने किसके लिए लडा था, यह भी किसी से छिपा नहीं है। बहरहाल, इंडिया गेट की नींव 10 फरवरी, 1921 को रखी गई और इसे राष्ट्रीय स्मारक उस समय घोषित किया गया, जब वर्ष 1931 में हमारी आजादी के संघर्ष के नायकों भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी दी जा रही थी। और इंडिया गेट को राष्ट्रीय स्मारक घोषित करने वाला शख़्स वही लॉर्ड इरविन था, जिसने इन तीनों जांबाज स्वतंत्रता सेनानियों को फांसी पर लटकाने का काम किया था। इसीलिए इंडिया गेट की इमारत पर खुदे नामों में हमारे शहीदों के नाम नहीं हैं। सबसे दुःख की बात यह है आजादी के बाद सीमाओं की रक्षा करते हुए जो सैनिक शहीद हुए, उनकी याद में वर्ष 1971 में अमर जवान ज्योति को इसी इंडिया गेट के साये में बनाया गया। साफ है, इन शहीदों को स्थान उन सैनिकों के नीचे दिया गया, जो ब्रिटिश साम्राज्य को बचाने के लिए मारे गए। राजनीतिक आजादी के बाद क्या हमारी सरकार के पास कोई और स्थान नहीं था, जहां अमर जवान ज्योति की स्थापना की जाती? पर ऐसा लगता है कि बीते छह दशकों में हमारी गुलाम मानसिकता और मजबूत हुई। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जो कौम अपने शहीदों को भूल जाती है, वह पतन की ओर बढ़ने लगती है। अभी हाल ही में गुजरात के मुख्यमंत्री ने केंद्र सरकार को लगभग चेतावनी देते हुए कहा था कि न हम केंद्र से कुछ लेंगे और कुछ न देंगे इस पर जिन सिपाहियों के नाम खुदे हैं, वे ब्रिटिश साम्राज्यवाद को बचाने के लिए प्रथम विश्व युद्ध में वीर गति को प्राप्त हुए थे, हमारी आजादी के एक भी परवाने का नाम इस क्यों नहीं अंकित है? यह नजरिया गणतंत्र-विरोधी, बल्कि देश को तोडने वाला है। और ऐसा दुस्साहस कोई राजनेता तभी करता है, जब समाज अपने राष्ट्रीय आंदोलनों को भुला देता है। आज हमारे लिए सत्ता और वोट अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं। इनके लिए हमें जाति, धर्म और क्षेत्र के नाम पर बांटने वाले नेता देश के संविधान से ऊपर हो गए हैं।

महात्मा गांधी के 'संपूर्ण आजादी के संकल्प' को पंडित नेहरू के नेतृत्व में भारत की जनता ने 26 जनवरी, 1950 को अंगीकृत किया था। इस संपूर्ण आजादी के प्रस्ताव को नेताजी सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में 31 दिसंबर, 1929 को लाहौर कांग्रेस ने पारित किया था। इसी प्रस्ताव को शहीद भगत सिंह व उनके साथियों ने अमर वा1य बनाने का संकल्प लिया था, इसी संकल्प ने देश की जनता को 'इंकलाब-जिंदाबाद' का नारा दिया, जो आज भी समाज को बदलने वालों का प्रमुख नारा है। गांधी, सुभाष व भगत सिंह की सार्थक पहल और कुर्बानियों की ही देन है कि 26 जनवरी, 1950 को हमने अपनी संप्रभुता की स्थापना की। पिछले 62 वर्षों से हम इंडिया गेट के सामने नतमस्तक होते रहे हैं, लेकिन आज तक हमने उस पर अपने एक वीर नायक का नाम अंकित नहीं किया। उस क्रांतिकारी भगत सिंह का भी नहीं, जिन्होंने फांसी पर चढने से पहले कहा था, 'अगर फांसी से बच गया, तो क्रांति का प्रतीक चिह्न मद्धम पड जाएगा। यह संभवतः मिट ही जाएगा, लेकिन दिलेराना ढंग से हंसते-हंसते मेरे फांसी पर चढने की सूरत में हिंदुस्तानी माताएं अपने बच्चों के भगत सिंह बनने की आरजू किया करेंगी और देश की आजादी के लिए कुर्बानी देने वालों की तादाद इतनी बढ जाएगी कि क्रांति को रोकना साम्राज्यवादी या तमाम शैतानी श1तयों के बूते की बात नहीं होगी।' आज हम इन सपूतों के नाम लिखने से भी कतरा रहे हैं!

तीसरा स्वाधीनता आंदोलन नामक संगठन पिछले वर्ष से स्वाधीनता आंदोलन के लाखों शहीदों की याद में राष्ट्रीय स्मारक बनाने तथा इंडिया गेट पर 26 जनवरी को सलामी बंद कराने के लिए आंदोलन छेडे हुए है। इसकी मांग है कि हमें अपने स्वाधीनता आंदोलन के दौरान पैदा हुए उसूलों, त्याग, तपस्या व बलिदान के राजनीतिक मूल्य-बोध को नई पीढी तक पहुंचाने के लिए ऐसे प्रतीक चाहिए, जिसे हमने गढा हो। इंडिया गेट पुरातात्विक या वास्तु महत्व चाहे जितना रखे, हमारे गौरव का प्रतीक नहीं है।

कल्याण-भाजपा दोनों ही प्रभाव खो बैठे हैं

लगभग चार साल बाद एक बार फिर कल्याण और भाजपा आमने-सामने हैं। राज्य की लगभग आधा दर्जन सीटें भाजपा और कल्याण के कद को तय करंगी। इस बार कल्याण की अनुपस्थिति के बावजूद पूर प्रदेश की निगाहें बुलन्दशहर पर रहेंगी जिसके कारण भाजपा के अन्दर इतना बड़ा बखेड़ा खड़ा हुआ।वर्ष 1999 में जब कल्याण ने भाजपा से बगावत की थी। तब कल्याण ने ही भाजपा को ही खत्म करने का अभियान चलाया। इस युद्ध में भाजपा का नुकसान हुआ। लेकिन कल्याण का भी नुकसान कम नहीं हुआ। इस आपसी कलह में भाजपा और कल्याण दोनों ही अपना जनाधार गँवा बैठे। 2004 में जब कल्याण सिंह की भाजपा में वापसी हुई तो भाजपा उत्साहित थी। पिछले लोकसभा चुनाव के ठीक पहले कल्याण भाजपा में लौटे थे और भाजपा मुख्यालय में अपनी पुनर्वापसी के जश्न में जुटे लोगों के बीच यह एलान किया था कि अब भाजपा 55 सीटे पाएँगी। लेकिन जब परिणाम सामने आए तो भाजपा की सीटें 29 से घट कर दस रह गईं। 2007 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने कल्याण को मुख्यमंत्री के रूप में पेश किया और पार्टी 88 से घट कर 51 सीटों पर आ गई। इन परिणामों से साफ हो गया कि उत्तर प्रदेश में भाजपा और कल्याण दोनों अपनी चमक खो चुके हैं। 2004 लोकसभा चुनाव के ठीक पहले हुआ घटनाक्रम अब उल्टी राह पर चला है। तब कल्याण ने भाजपा को जिताने का संकल्प लिया था और 2009 में लोकसभा के ठीक पहले उन्होंने भाजपा को मिटाने का संकल्प लिया है। उत्तर प्रदेश में जो राजनीतिक जंग होगी उसमें एक नजर भाजपा और कल्याण के जंग पर भी लगी रहेंगी।

ओबामा तो खुश हुआ, हमें खुशी का इंतजार करना चाहिए

विशेष टिप्पणी

सुरेन्द्र बंसल

बराक हुसैन ओबामा जब राष्ट्रपति पद की शपथ लेकर व्हाइट-हाऊस पहुंचे तो अमेरिका समेत तमाम देशों में एक अजीब कौतूहल और उत्साह रहा. भारत में भी इसे एक शुभ-संकेत की तरह लिया गया और खुशी मनाई गई. ऐसा उत्साहजनक वातावरण आखिर क्यों बना...? शायद इसलिये कि बराक ओबामा काले हैं और पहलीबार गोरों पर किसी काले नेता का राज कायम हो रहा है, या इसलिये कि जार्ज-बुश की रीति-नीतियों से अमेरिका ही नहीं समूचा विश्व त्रस्त्र रहा, या इसलिये कि बराक ओबामा भारतीय दर्शन, धर्म और अध्यात्म के नजदीक हैं या यूं कहें कि हर परिवर्तन कुछ नई बातें नई राह लेकर आता है और यह ऐसी ही उम्मीदों की खुशी है. बहरहाल यह तो है कि इन उत्साहित नजारों से बराक हुसैन का दिल नाच उठा और शपथ के बाद पत्नी के साथ बाल-डांस करते हुए वे यही कहते रहे होंगे 'ओबामा खुश हुआ.'

ओबामा तो खुश हुआ, पर क्या सच में खुशी वही है जो सबको महसूस हो रही है. किसी भी राष्ट्र की नीति व्यक्ति के समृद्ध सोच से जुड़ी तो होती है लेकिन यह सोच राष्ट्रहित से कभी ऊपर नहीं हो सकता. ओबामा अमेरिका के राष्ट्रपति निर्वाचित हुए हैं उनकी कर्त्तव्यनिष्ठा पहले अमेरिका के प्रति है जो होना भी चाहिए. हम भारतीय दृष्टि से देखें और खंगाले कि भारतीय मानस ओबामा के राष्ट्रपति चुने जाने से खुश और उत्साहित क्यों हैं. भारतीयों को लगता है ओबामा उनके ज्यादा करीब है, हनुमान भक्त है, युवा हैं और नई सोच के धनी हैं. पाकिस्तान के प्रति उनका रवैया सख्त रहेगा और आतंकवाद को दबाने के लिये ओबामा पाकिस्तान की बखिया उधेड़ने का काम करेंगे. हम अपनी अपेक्षाओं को बराक ओबामा के राष्ट्रपति बन जाने से जोड़कर देख रहे हैं. यह ठीक नहीं है. इस तरह से यह जाहिर होता है कि हमारे अंदरूनी मामलों, हमारे अंतर्राष्ट्रीय मामलों सभी में हमें अमेरिका की जरूरत है. एक तरफ हम कहते हैं कि हमें किसी दूसरे राष्ट्र के हस्तक्षेप की जरूरत नहीं है फिर क्यों हम अमेरिका की तरफ देख रहे हैं, क्या हम भी अमेरिका के दबाव में है जो वहां परिवर्तन पर खुशी के रूप में हमारे चेहरों पर आ गई है.

यह कूटनीति नहीं है. बराक हुसैन ओबामा का स्वागत होना चाहिए लेकिन हमें खुश तब ही होना चाहिए जब उनकी नीतियां हमारी विदेश नीति के अनुकूल हो. वे दोहरी नीति नहीं चलें. उनके नेता भारत आकर जब पाकिस्तान जाएं तो अपने बयान नहीं बदलें और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के हित में काम करते हुए दिखें. हमें ओबामा को भारत की दृष्टि से देखना होगा, और नजर पूरी तरह कूटनीति से इस तरह रखना होगी कि हम किसी तरह से दबाव में नहीं आएं और अपने तर्कों, रीतियों और नीतियों से विश्व नेताओं को अपने साथ जोड़े जिसमें बराक हुसैन ओबामा भी अमेरिका से हों. यह कभी न हो कि हमें अमेरिका से जोड़ कर देखा जाए. होना सिर्फ यही चाहिए हमें हमारी नीतियों से सुविचारों से, सद्भावना से और वास्तविकता से ही पहचाना जाए. इसलिये जब ओबामा खुश हुआ है हमें खुशी का इंतजार करना चाहिए.

स्वामी मुद्रक प्रकाशक एवं संपादक उत्तम झंवर द्वारा मे. मोर्या आर्ट प्रा.लि. के लिये अपनी दुनिया प्रिन्टर्स १३, प्रेस काम्पलेक्स एबी रोड इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं ३०५ मोर्या आर्केड १/२ ओल्ड पलासिया, इंदौर में प्रकाशित फोन : ४०४१२६८